अनुक्रमणिका

भूमिका **I-IV**

प्रथम अध्याय :
किसान एवं खेतिहर मजदूर : जीवन और संघर्ष **1-51**

1.1 : किसान से अभिप्राय

1.2 : किसान के प्रकार

1.3 : किसान और उसकी समस्याएँ

1.4 : किसान और कृषि क्रांतियाँ

1.5 : किसान और कृषि नीतियाँ

1.6 : किसान और किसान आंदोलन

1.7 : प्रमुख किसान नेता

1.8 : किसान और बहुराष्ट्रीय कंपनियां

1.9 : किसान और भूमि सधार व्यवस्था

द्वितीय अध्याय :
हिंदी के प्रमुख किसानी उपन्यास **52-77**

2.1 : स्वतन्त्रता से पूर्व किसानी उपन्यास

2.2 : स्वातंत्र्योत्तर किसानी उपन्यास

2.3 : इक्कीसवीं सदी के किसानी उपन्यास

तृतीय अध्याय :
इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किसान जीवन का संघर्ष और चुनौतियाँ **78-129**

3.1 : भारतीय समाज में किसान

3.2 : महिला किसान की उपस्थिति

3.3 : किसान और सरकारी नीतियाँ

3.4 : सरकारी तंत्र और किसान

3.5 : प्राकृतिक आपदा और किसान

3.6 : हिंदी उपन्यास और किसान आंदोलन

चतुर्थ अध्याय :
इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में खेतिहर मजदूरों का संघर्ष और चुनौतियाँ **130-167**

4.1 : शोषण के विविध रूप

4.2 : खेतिहर मजदूर : बेरोजगारी और पलायन

4.3 : भूमि समस्या से जूझता खेतिहर मजदूर वर्ग

4.4 : खेतिहर मजदूर का पारिवारिक और सामाजिक संघर्ष

पंचम अध्याय :

इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में किसान और खेतिहर मजदूर : तुलनात्मक अध्ययन **168-253**

5.1 : व्यवस्था और तंत्र

5.2 : सरकारी नीतियाँ और किसान एवं खेतिहर मजदूर की दशा

5.3 : उपन्यासों में अभिव्यक्त विस्थापन और पलायन की समस्या

5.4 : उपन्यासों में अभिव्यक्त किसान और खेतिहर मजदूर आंदोलन

5.5 : ऋणग्रस्तता

5.6 : आत्महत्या

5.7 : किसान और खेतिहर मजदूरों के अंतर्संबंध

- **उपसंहार** **254-259**
- **संदर्भ ग्रंथ सूची** **263-270**